



लेडी विल्किंसन स्वॉर्ड

जिलेट नैरेटिव — नांदो, लेखक

gillettenarrative.com

जिंदगी कभी अवसरों का पुलिंदा नहीं होती। जिंदगी एक अकेला अवसर है जो दोबारा कभी नहीं आता। मेरे लिए तो यही सच था। इतालवी फ्रीमेसनरी में अपने वर्षों के दौरान — जिसकी विधियों और परंपराओं को यूनाइटेड ग्रैंड लॉज ऑफ़ इंग्लैंड मान्यता देती थी — मुझे एक अनोखे-से जमावड़े में शामिल होने का मौका मिला। मैं पहले से ही तृतीय श्रेणी में था, फिर भी मैं सही मनोभाव के साथ पहुँचा: एक शागिर्द के मनोभाव के साथ। यह कोई अनुष्ठानिक बैठक नहीं थी। न कोई एप्रन थे, न कोई प्रतीक, न याद रखने को कोई शब्द। यह बस एक रात्रिभोज था। लंदन में एक रात्रिभोज। उन शामों में से एक, जो जीते जी तो साधारण लगती हैं और असाधारण तभी बनती हैं जब कई बरस बाद आप आखिरकार उनका अर्थ समझ पाते हैं। लंदन में उसका वही पुराना जादू था। इतिहास मानो हर इमारत से झाँक रहा था। द क्राउन। द सिटी। निजी क्लब। संस्थाएँ। वे परंपराएँ जो अपने रचयिताओं से ज़्यादा लंबा जीवन जीती हैं। जिलेट के भीतर अपने पिछले पेशेवर अनुभवों के ज़रिए, और उन्हीं जगहों पर, मैं क़रीब-क़रीब इत्तेफ़ाक़ से एक ऐसी कहानी से टकराया जो खुद मुझसे कहीं ज़्यादा पुरानी थी। एक ऐसी कहानी जो फ्रीमेसनरी की नहीं थी।

न ही वह कारोबार की थी। वह इंग्लैंड की थी। उसका नाम था विल्किंसन स्वॉर्ड। या शायद उसे यूँ कहना ज़्यादा ठीक होगा: लेडी विल्किंसन स्वॉर्ड। क्योंकि कुछ कंपनियाँ मुनाफ़ा पैदा करती हैं। कुछ इतिहास रचती हैं। उसने दोनों किया था। उसका लहजा अंग्रेज़ी था, उसका अंदाज़ शालीन, उसकी शैली परिष्कृत। जितने बरस उसने ढोए थे, उनके बीच से वह मुस्कराती थी। वह जानती थी कि अब वह जवान नहीं रही। उसने जवानी की चपलता खो दी थी, पर अपने दिमाग की साफ़-सुथरी सोच नहीं। उसकी बुद्धि अब भी प्रबल थी। उसके विचार अब भी पैने थे। जब भी वह मुझसे बात करती, वह अँगूठी के पास घुरघुराती किसी बूढ़ी बिल्ली-सा तक्ररीबन रूमानी लहजा अपनाती, और मेरा नाम वह हमेशा हल्की-सी ख़ामी के साथ उच्चारती: “फर्नांदो...” उसे कभी किसी परिचय की ज़रूरत नहीं पड़ती थी। उसे बस कमरे में दाखिल होना होता था। वह अपने साथ इतिहास का बोझ ढोती थी। उसने युद्ध देखे थे, राजा

देखे थे, रानियाँ, औद्योगिक क्रांतियाँ, अधिग्रहण और बोर्ड की बैठकें देखी थीं। उसने आदमियों को अमीर बनते देखा था। उसने साम्राज्यों को मिटते देखा था।

उसने ऐसे प्रबंधक देखे थे जो खुद को अमर मान बैठे थे। और फिर भी, वह अब भी वहीं थी। शालीन। खामोश। ब्रिटिश। उस पल मैंने समझा कि कुछ कंपनियाँ दरअसल कंपनियाँ होती ही नहीं। वे संस्थाएँ होती हैं। कुछ शेयरधारकों की होती हैं। कुछ इतिहास की। लेडी विल्किंसन स्वीड इतिहास की थी। और मैं भी थोड़ा-थोड़ा उसका होने लगा था।

फर्दिनांदो फ्रेगा